परमजीत कौर 'रीत'

माँ ने आज बनाई खीर

माँ ने आज बनाई खीर।
मीठी-मीठी गाढ़ी खीर।।

दूध लिया गौरी गईया से,
अक्षत उसमें डाले,
धीमी-धीमी आँच जलाकर
माँ ने दिए उबाले,
भीनी-भीनी,
खोये जैसी लाली वाली खीर।

माँ ने आज बनाई खीर।
मीठी-मीठी गाढ़ी खीर।।

काजू किशमिश और खीर में
डाले हैं बादाम,
मीठी शक्कर, सूखे मेवे
डाले गए तमाम,
मिली कटोरी भर-भर सबको
क्या सुखदाई खीर ।

माँ ने आज बनाई खीर।
मीठी-मीठी गाढ़ी खीर।।

गूगल बाबा

गूगल बाबा! गूगल बाबा !
हमको ज़रा बताओ ।
इतना ज्ञान कहाँ से लाते,
हमको भी समझाओ ।।

जीव-जंतु, फल-फूल, लता, द्रुम,
सूरज, चन्दा, तारे।
धरती , सागर, अंतरिक्ष ,घन,
तुम्हें ज्ञात हैं सारे।।

हवा, आग, पानी इन सबका
भेद किस तरह पाते।
अपनी कृत्रिम बुद्धि दिखाकर ,
हमको चकित कराते।।

अन्तर्जाल किस तरह का यह
कैसा ताना बाना।
अन्दर की भी सैर कराओ,
सब हमको समझाना।।

गूगल बाबा! गूगल बाबा !
हमको ज़रा बताओ ।
इतना ज्ञान कहाँ से लाते,
हमको भी समझाओ।।

ISSN:2583-8849